मोहनजोदड़ो की माया

के जीवन में एक दिन

मुल्क राज आनंद   चित्र : पुलक बिस्वास

हिंदी : विदूषक

करीब पांच हज़ार साल पहले की बात है.

सूरज की पहली किरण के छूते ही मोहनजोदड़ो, नींद से उठे कमल के फूल की तरह खिल उठा. मुर्गे ने बांग देकर प्रकाश देवता का आवाहन किया. मर्द और औरतें चारपाइयों से उठे.

छोटी लड़की माया, माता-पिता से पहले ही जग गई थी. वो एक फूल की कली जैसी दिखती थी. पहले वो छत की मोटी-मोटी लकड़ी की बल्लियों को घूरती रही. उनपर फूलों और चिड़ियों की नक्काशी जो थी. फिर वो खुद से बातें करती रही और गाने गुनगुनाती रही. उसकी आवाज़ उस कमरे तक पहुंची जहाँ माता-पिता सो रहे थे. कुछ देर बाद माया को अकेला लगा. फिर वो अपनी छोटी खाट से उठी और दौड़कर अपने पिता की चारपाई के पास गई. वो अपने साथ, खिलौना-गाड़ी की डोर भी खींचती हुई लाई. फिर माया ने पिता के पेट पर चढ़कर उसपर चलने की कोशिश की, बिल्कुल वैसे ही, जैसे तनी रस्सी पर नट चलता है.

“बा,” उसने अपने पिता को बुलाया, “बा.”

पर बा ने कोई जवाब नहीं दिया. वो थोड़ा सा घुर्राए. फिर माया ने खेल-खेल में उनकी दाढ़ी खींची. इससे पिता कराहे पर माया की माँ उठ गईं. वो माया को, पिता के पेट से उठाकर अपनी चारपाई पर ले गईं.

उन्होंने माया के भूरे शरीर को अपने घुटनों पर रखा. फिर माया अपने पैरों को ऊपर-नीचे झुलाती रही. वो छोटी लड़की हंसी और रोई – बिल्कुल वैसे जैसे वो झूले पर झूल रही हो. वो एक छोटी चिड़िया जैसी डरपोक थी.

खेल से माया में कुछ दम आया. पतझड़ की सुबह ठंडी थी, पर माया एकदम खिली-खिली थी. बा को अभी भी ठण्ड लग रही थी और वो शाल ओढ़कर पत्थर पर बैठे थे. वो मिट्टी के उन बर्तनों और खिलोनों को देख रहे थे जो उन्होंने कल बनाए थे. उन्हें अभी पकाना बाकी था. वो काम उन्हें आज करना होगा.

माँ ने बा से कहा : “जाओ बड़े हौद में नहाकर आओ. माया को स्कूल जाना है.”
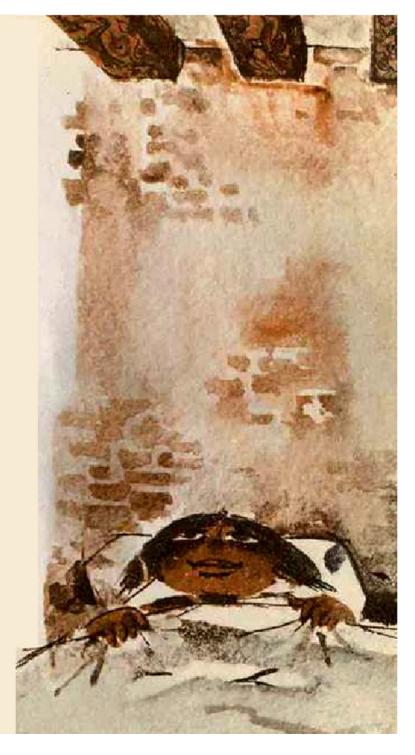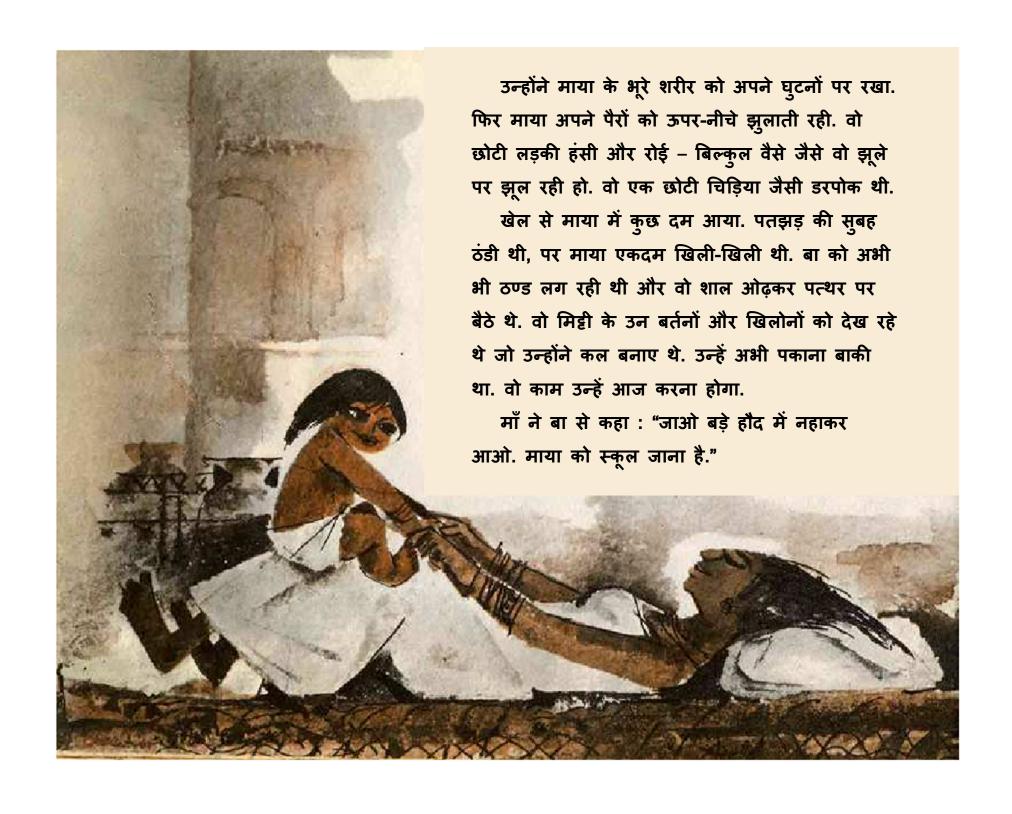
माया अपनी गाड़ी और मिट्टी के बने खिलोनों से खेल रही थी. पर जब माँ ने नहाने की बात कही तो माया ने दौड़कर बा के गले में अपने हाथ डाल दिए.

"चलो बा, चलें," उसने कहा.

माँ ने माया को, एक स्कर्ट और एक अंगरखा पहनाकर तैयार किया.

मोहनजोदड़ो शहर का "महान स्नानघर" या स्नान-हौद एक टैंक था जो बहुत मोटी दीवारों से घिरा था. उसके चार दरवाज़े थे – जो उत्तर, दक्षिण, पूरब और पश्चिम चारों दिशाओं में थे. टैंक के चारों ओर वरांडे, कमरे और कई बड़े-बड़े हाल थे. उनमें से एक कमरे में कुआँ था. वहां सीढ़ियाँ थीं जिनसे अन्य कमरों में जाया का सकता था.

वहाँ पर गरीब लोग ही आते थे. जैसे कुम्हार, तांबे के कारीगर, जुलाहे, पेन्टर्स और स्कूल के टीचर. यह लोग गरीब थे, और उनके पास अपने निजी स्नानघर नहीं थे. सिर्फ अमीर व्यापारियों के घरों में ही निजी स्नानघर थे. इसलिए "महान स्नानघर" वो जगह थी, जहाँ लोग आपस में मिलते-जुलते थे.
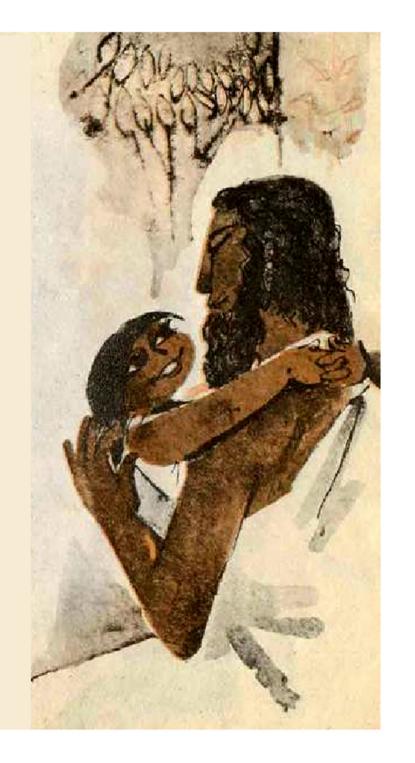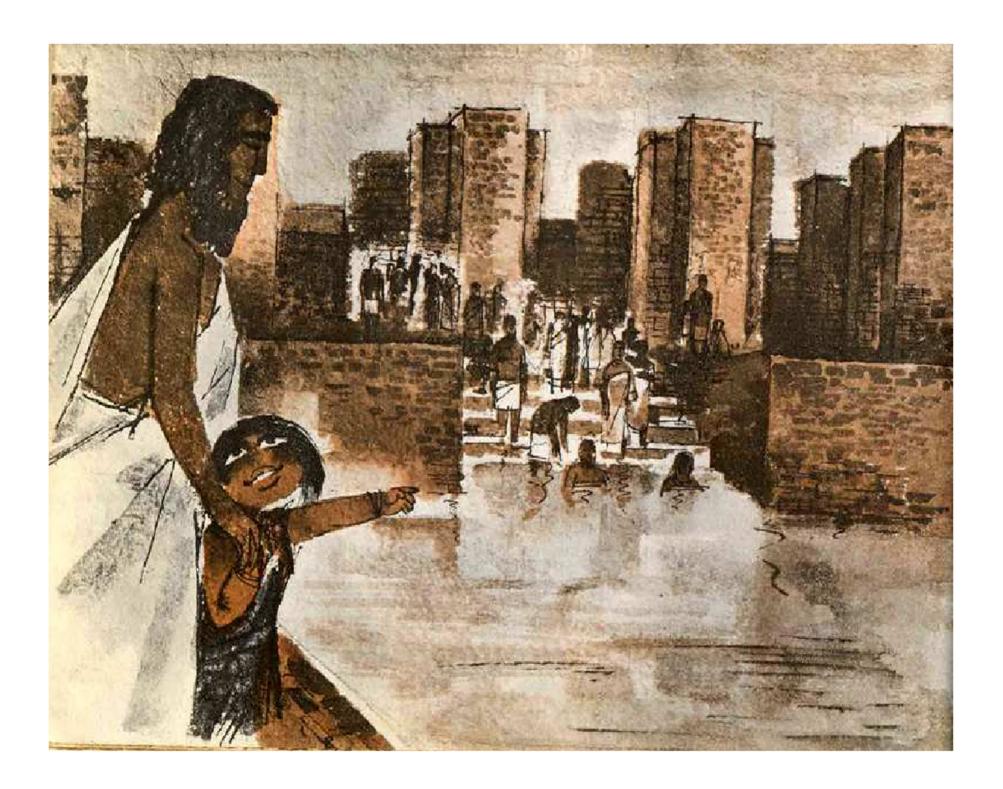
माया वहां की भीड़ में बहुत खुश होती. वहां आदमी और औरतें साफ़ पानी में डुबकियाँ लगाते. कुछ लोग स्नान करते समय खुद को गर्म रखने के लिए भजन गाते. बाकी लोग बार-बार अपनी इष्ट देवी का नाम दोहराते – जिससे कि वो, उनपर गुस्सा न हों. माया तुरंत पानी में जाना चाहती थी. उसने बा के कंधे से कूदने की कोशिश भी की और वो लगभग पानी में गिर पड़ी. फिर बा ने उसे मजबूती से पकड़ा और उससे कुछ देर धीरज रखने को कहा.

बा ने सुरक्षा के लिए अपना शाल और जूते, स्नानघर के रखवाले के पास रख दिए. उन्होंने माया के कपड़े भी रखवाले को दिए. फिर बा सीढ़ियों से पानी में नीचे उतरे. उन्होंने अपने हाथों से सहारा देकर माया को तैरना सिखाया. छोटी बच्ची ने खूब हाथ-पैर चलाये, छपाके मारे और चारों तरफ पानी बिखराया. जब बा ने कुछ क्षण के लिए अपना हाथ हटाया और उसे खुद तैरने दिया, तो माया ख़ुशी और डर से चिल्लाई.

घर पर माँ ने दाल-चावल की खिचड़ी, मिट्टी के बर्तन में पकाई. वो बर्तन, बा ने विशेष तौर पर माँ के लिए, साल भर पहले बनाया था.
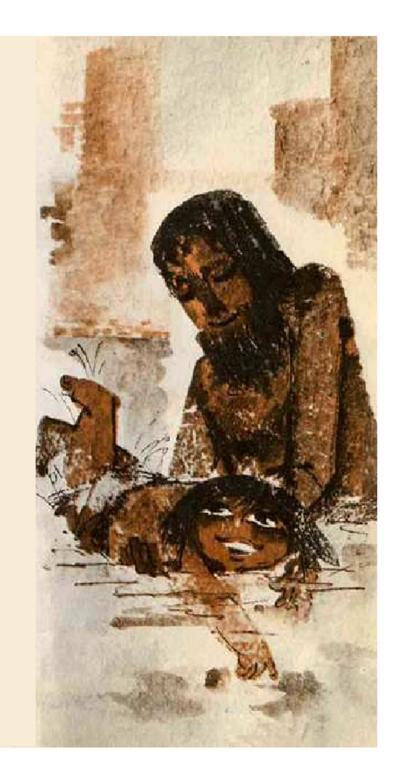
उनके बड़े किचन में कई बड़े बर्तन थे जिन्हें बा ने बनाया था. कुछ में चावल और कुछ में तेल रखा था. तेल - पतली गर्दन वाली सुराही जैसे बर्तन में रखा था.

माया किचन में बा के पास बैठी और उसने अपनी मिट्टी की छोटी थाली में से खिचड़ी खाई.

फिर माँ ने उसके मुंह-हाथ धोए. जब माँ ने माया की आँखों में सिलाई से सुरमा लगाया तो माया जोर से रोई. माया का बहुत मन था कि वो भी माँ का सिंदूर लेकर अपने बालों में लगाये. माँ जिस छाल को रगड़कर अपने होटों को लाल करती थीं, माया भी वही करना चाहती थी. माया को सभी लाल चीज़ें पसंद थीं.

छोटी बच्ची यह सब करे, वो माँ को अच्छा नहीं लगता था. फिर माँ ने पुच्ची देकर माया को स्कूल भेजा. दो लड़कियां - तोतो और कोको भी स्कूल जा रही थीं. माया भी उनके साथ स्कूल गई. उनके स्कूल में बच्चों को बुलाने के लिए कोई घंटी नहीं थी.

अगर बच्चे देर से भी आते तो टीचर कुछ नहीं कहता. टीचर, क्लास के कोने में एक तख़्त पर बैठकर स्लेट पर लिखता था. वो यह देखता था कि क्या कोई छात्र उसके लिए कोई भेंट लाया है. टीचर, वैसे कोई फीस नहीं लेता था. बच्चों उसके लिए कुछ खिचड़ी, फल या मेवा लाते. फिर माता-पिता उसे साल में, दो-तीन बार कपड़े भेंट करते.

फिर टीचर ने खांसते हुए कहा, "अच्छा बच्चों, अब हम सूर्य की प्रशंसा के लिए एक गीत गायेंगे." फिर लड़कों और लड़कियों ने इतनी जोर से "प्रकाश के उपहार" का गीत गया कि वो ज़रूर सीधा स्वर्ग तक पहुंचा होगा.

उसके बाद टीचर ने बच्चों से, एक से लेकर सोलह तक गिनती सुनाने को कहा.
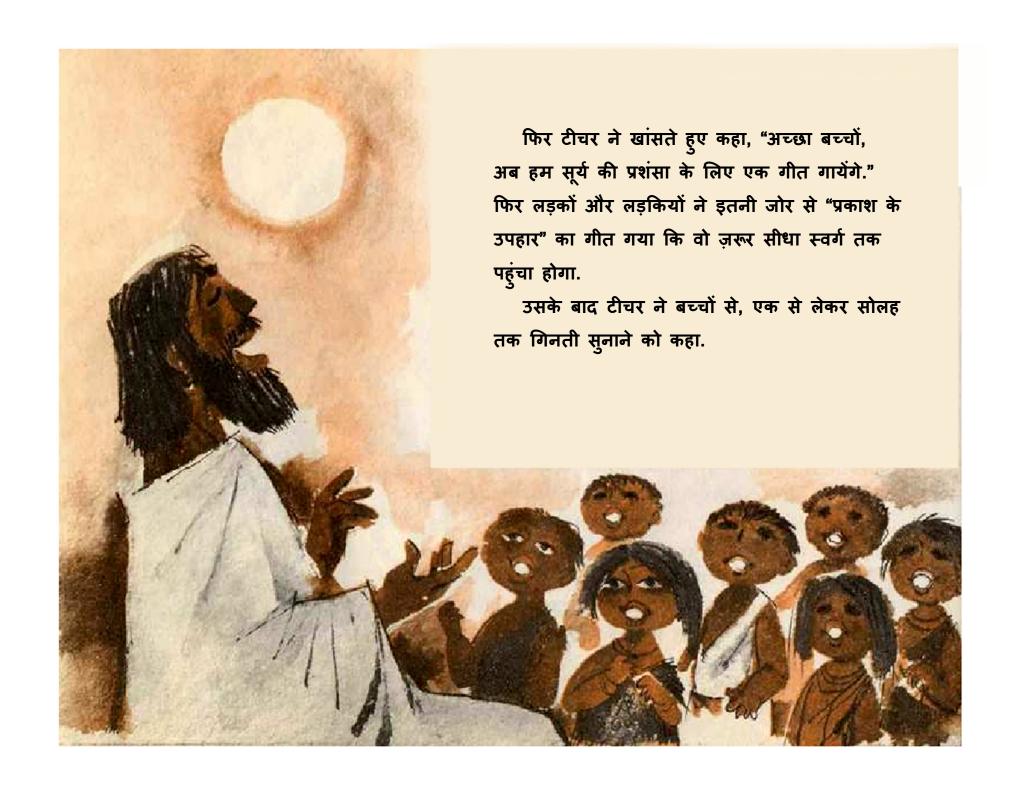
उसके बाद बच्चों को गीली मिट्टी से गुड़िए और जानवर बनाने का काम दिया गया. माया ने अन्य बच्चों की अपेक्षा ज़्यादा सुन्दर खिलोने बनाए, क्योंकि उसने अपने पिता को मिट्टी के खिलोने बनाते हुए देखा था.

फिर टीचर ने बच्चों को एक पुराने बरगद के पेड़ के झुरमुटे में छिपा-छिपी खेलने को भेज दिया. दोपहर बारह बजे टीचर ने बच्चों को घर जाने दिया.

दोपहर के समय हवा एकदम थमी थी. आसमान में कुछ पतंगें ज़रूर गोल-गोल लहलहा रही थीं. जब माया घर लौटी तो बा कुम्हार के चक्के के सामने बैठे थे. चक्के का गोल-गोल घूमना माया को बहुत अच्छा लगता था. बा के कुशल हाथों से चक्के पर मिट्टी के बर्तन बनते देखना, उसे बहुत पसंद था.
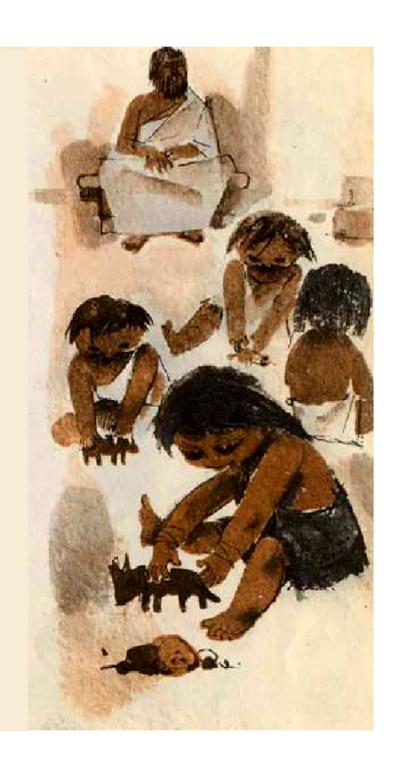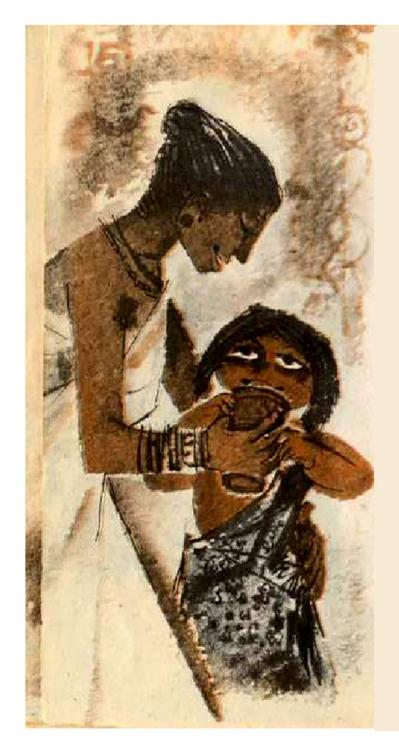
माया भी चक्के के पास बैठकर वही करना चाहती थी जो बा कर रहे थे. पर तभी माँ ने माया को घर में गरम दूध पीने के लिए बुलाया. माँ ने दूध को मिट्टी के एक सकरे बर्तन में लौटा जिसे बा ने विशेष तौर पर माया के लिए बनाया था. पर माया को दूध पर तैरती मलाई नापसंद थी इसलिए वो दूध छोड़कर भागना चाहती थी. पर माँ ने उसे कहानी सुनाकर, मन बहलाकर दूध पिलाया.

"अगर तुमने कोई शैतानी नहीं की," बा ने कहा "तो मैं तुम्हारे लिए एक हैंडल वाला कप बना दूंगा. उस कप से दूध पीने में तुम्हें बहुत मज़ा आएगा."

"वो कप आप मेरे लिए अभी-अभी बनायें," माया ने कहा.

पर तभी माँ ने माया को उठाकर चारपाई पर लिटा दिया क्यूंकि वो माया के दोपहर के सोने का समय था.

माया कुछ बेचैन थी इसलिए उसे नींद नहीं आई. माँ, दूसरी औरतों से कुछ बातें कर रही थी जो माया को सुनाई दे रहीं थीं. सब औरतें आँगन में बैठकर कुछ सिलाई कर रहीं थीं. वो कपड़े पर कढ़ाई करते-करते एक-दूसरे से बातचीत कर रहीं थीं. माया को उनकी आवाजें संगीत के सुरों जैसी लग रहीं थीं. माया उनकी ओर आकर्षित हुई और लेटे-लेटे उनकी बाँतें सुनती रही. उसे उनकी बातचीत के बारे में जानने की भारी उत्सुकता हुई.

माया ने ध्यान से उनकी बातें सुनीं. माँ ने उन्हें बताया कि जल्दी ही बा, सिन्धु नदी से हरप्पा तक जायेंगे. वो अपने साथ मिट्टी के बड़े-बड़े मर्तबान और घड़े लेकर जायेंगे, जिन्हें एक अनाज के व्यापारी ने बनवाया था. माँ इसलिए दुखी थीं क्योंकि बा बहुत दिनों तक घर पर नहीं होंगे. हरप्पा, वहां से 400 मील दूर था. जब दो साल पहले बा नदी से उर्स गए थे तो वो एक साल बाद ही वापिस लौटे थे.
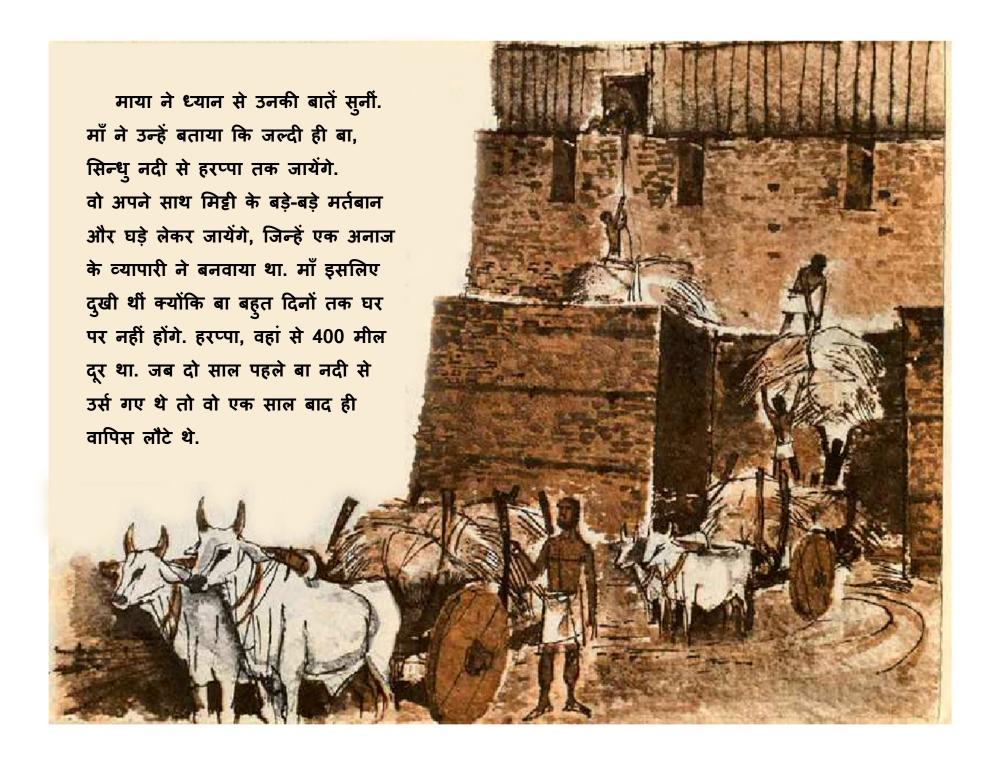
उनमें से एक औरत ने माँ को समझाया कि वो दुखी न हों. बा खुशकिस्मत हैं, हरप्पा में वो “अनाज के महान-भण्डार” को देख पाएंगे. सब लोग उसी की चर्चा करते हैं. उस भंडार घर में 48 कमरे थे – सभी चावल, गेहूं और जौ से भरे थे.

यह सुनकर माया बहुत उत्साहित हुई. वो भी उड़कर हरप्पा और उर्स जाना चाहती थी. उसके दिमाग में यह दोनों शहर अब आसमान में दो तारों की तरह नाच रहे थे. वो वहां जाने को बेचैन थी. “अनाज के महान-भण्डार” को देखने में कितना मज़ा आएगा! फिर वो बेचैनी से चारपाई पर इधर-उधर लोटने लगी. काश, बा उसे भी अपने साथ वहां ले जाएँ. वो उन जगहों की सैर करेगी जहाँ बच्चे सोने-चांदी के खिलोने से खेलते हैं, और जहाँ अनार, तरबूज, संतरे और अंगूर खाने को मिलते हैं!

फिर माया उठकर आँगन में माँ के पास गई. माँ अभी भी बातें कर रही थीं, पर माया ने उनसे बार-बार एक सुई-धागा माँगा. वो भी माँ जैसे ही कपड़े पर कढ़ाई करना चाहती थी.

माँ ने बेटी को एक कपड़े का टुकड़ा और सुई-धागा दिया. फिर माया ने भी सिलाई शुरू की.

आँगन के बाहर लड़के कंचों से खेल रहे थे. माया को उनकी आवाजें सुनाई दे रही थीं. उन आवाजों में उसे रा की आवाज़ सुनाई दी. रा - तोतो और कोको का भाई था. तोतो और कोको उसे सुबह साथ में स्कूल लेकर गईं थीं. वो तीनों बच्चे एक जुलाहे के थे जो उनके बिल्कुल पड़ोस में रहता था.

माया रा से मिलना चाहती थी, इसलिए वो दौड़कर बाहर गई. माया छोटी थी पर रा काफी ऊंचा था. माया को रा इसलिए पसंद था क्यूंकि उसके पास बहुत सुन्दर और रंग-बिरंगे कंचे थे. वो रा को छूना चाहती थी और उसके साथ कंचे खेलना चाहती थी.

पर बहुत सारे लड़कों के सामने माया को शर्म आ रही थी. इसलिए माया अपने पिता के कमरे के लकड़ी के दरवाज़े के पास खड़ी रही. वो भी उस खेल में शामिल होना चाहती थी पर लड़कों की रूखी आवाजों से उसे डर भी लग रहा था.

कुछ देर बाद तोतो और कोको भी आईं. वो दोनों एक रंग-बिरंगी ऊनी गेंद से खेल रही थीं. कितनी सुन्दर थी वो गेंद! उसमें इन्द्रधनुष के सारे रंग थे!

"मेरी तरफ गेंद फेंकों," माया ने कहा.

लड़कियों ने माया की ओर गेंद फेंकी. माया ने गेंद पकड़ी और फिर उसे हवा में ज़ोर से फेंका. फिर वो गेंद को दुबारा पकड़ने दौड़ी. पर वो उसे पकड़ नहीं पाई. गेंद ज़मीन पर गिरी. तभी रा का कुत्ता कालू आया और गेंद को पकड़ने के लिए दौड़ा. कालू ने अपने मुंह में गेंद को पकड़ा और वो वहां से दूर भागा.

फिर तीनों लड़कियों ने कालू का पीछा किया. उन्होंने उसे पकड़ा और उसके मुंह से गेंद निकाली. फिर वो तीनों गेंद को फेंकने और पकड़ने का खेल खेलती रहीं.
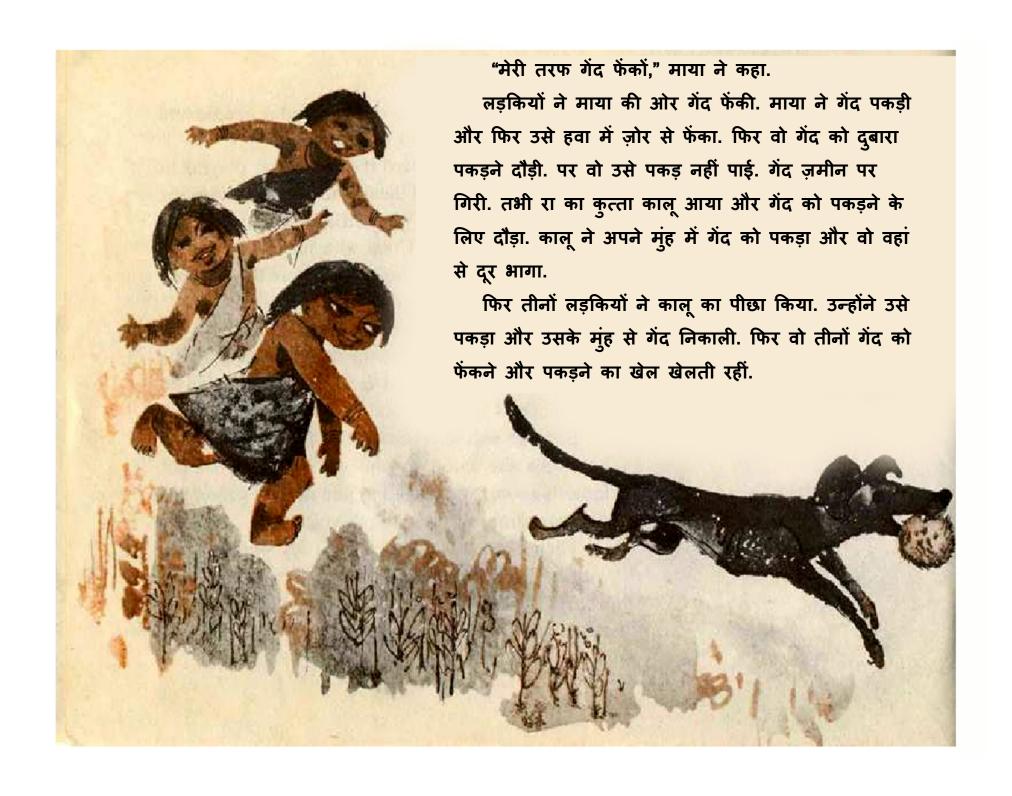
पर हर बार जब गेंद ज़मीन पर गिरती तो कुत्ता उसे पकड़कर भागता. फिर लड़कियां कुत्ते का पीछा करतीं. वो इतना दौड़ीं कि अब उन्हें गर्मी लगने लगी और पसीना छूटने लगा. फिर वो बैठ गईं – वो थकीं थीं, पर खुश थीं.

माया की माँ ने उन्हें बुलाया और उन्हें खाने को ताज़े संतरे दिए. माया ने अपने संतरे को हवा में उछाला और उसे गेंद जैसे पकड़ने की कोशिश की. माँ ने माया को फटकारा.

"मुझे संतरों का नाच अच्छा लगता है," बच्ची ने कहा.

"संतरे नहीं नाचते हैं," माँ ने कहा.

"मुझे लगता है संतरे नाचते हैं," माया ने कहा.

फिर माया बैठी और उसने संतरा छील कर नमक और मिर्च लगाकर खाया. माँ भी वैसे ही करती थी.

शाम हो चुकी थी. बा ने कल बनाए बर्तनों और खिलोनों को पका दिया था. अब वो उन्हें बाज़ार में बेंचने के लिए जा रहे थे. माया ने भी उनके साथ चलने की जिद्द की.

"तुम अपने साथ यह लेकर जा सकती हो," बा ने कहा.

फिर उन्होंने एक छोटा पका घड़ा, माया के सर पर रख दिया.

उसके बाद बा ने बर्तनों और खिलोनों की टोकरी उठाई और उसे अपने सर पर रखा.

फिर पिता और बेटी बाज़ार गए जो मोहनजोदड़ो शहर के बीचोंबीच था. उन्होंने कुछ चरवाहों को, अपनी गायों को घर वापिस लाते देखा.

कुछ देर में गायें, बा और माया के बहुत पीछे छूट गईं. वो शहर की तरफ चलते रहे. शहर की ओर जाने वाली सड़क चौढ़ी थी. फिर वो एक सकरी गली के पास आए. बा उस गली में मुड़ गए.

"हम इस गली में क्यूं जा रहे हैं?" माया ने पूछा.

"बाज़ार जाने का यह एक छोटा रास्ता है," बा ने कहा. "अगर हमने यह छोटी गली ली और फिर तीसरी दाईं गली ली, तो फिर हम उत्तर की सड़क पर आ जायेंगे. वहां से हम सीधे बाज़ार पहुँच जायेंगे."

बा और माया चलते रहे. उनके दोनों ओर दुकानें और लोगों के घर थे. अंत में वो बड़े बाज़ार पहुंचे.

वहां खूब चहल-पहल और आवाजें थीं. ऐसा लग रहा था जैसे बहुत से भेड़ें और बकरियों को मारा जा रहा हो. पर दरअसल वो व्यापारियों के चिल्लाने का शोर था. व्यापारी चिल्ला रहे थे और अपना सामान बेंचने की कोशिश कर रहे थे.

बा भी चिल्लाने लगे.
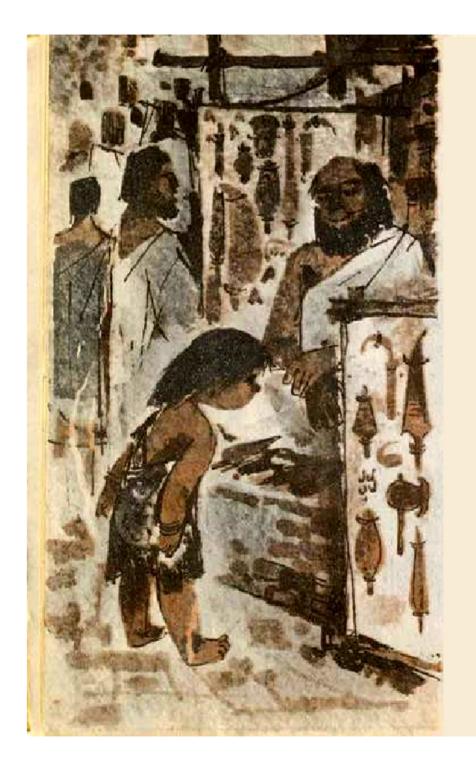
“आइए मालिक!” वो चिल्लाए. “आइए दयालू मालिक! यह खिलोनें खरीदें. देखें यह खिलौना कितनी सुन्दर आवाज़ करता है. आएं, अपने बच्चों के लिए सुन्दर खिलोनें खरीदें!”

माया ने अपने आसपास सब चीज़ों को बेसब्री से देखा. लोगों की बातचीत, हंसी, और सौदेबाज़ी देखकर वो बहुत उत्साहित हुई. उन तमाम आवाजों को सुनकर माया के चेहरे पर नई रंगत आई.

माया अपने पिता की खिलोनों की टोकरी के पास ही खड़ी रही. आते-जाते बच्चे मिट्टी की गाड़ी, मिट्टी के जानवरों और गुड़ियों को घूर-घूर कर देखते. बच्चे अपने पिता का हाथ पकड़े होते. जैसे ही बच्चे खिलोनें देखते वे अपने पिता को रुकने के लिए कहते. बच्चे खिलोनों की तारीफ करते. उससे माया बहुत खुश होती क्यूंकि उसने उन्हें बनाने में अपने पिता की मदद की थी.

दुकानदार ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहे थे.

फिर माया अपने पिता को छोड़कर कुछ दूसरी दुकानें देखने के लिए गई.

एक दुकान पर तरह-तरह के चाकू बिक रहे थे. वहां छोटे और बड़े चाकू, उस्तरे, दरांती, मछली पकड़ने वाले हुक, छेनी और आरियाँ बिक रही थीं. वहां तरह-तरह की कुल्हाड़ियाँ थीं – उनमें से कुछ तांबे और पीतल की बनीं थीं.

दूसरी दुकान में पत्थर की बनी हुई बहुत सी चीज़ें थीं.

उसके बगल वाली दुकान में रिबन, गहने और बालों में लगाने वाली चिमटियां बिक रहीं थीं.

"बड़े होकर," माया ने खुद से कहा, "मैं यह सारी चीज़ें ज़रूर खरीदूंगी."

"इस तरफ आओ! उन्हें सर हिलाते हुए देखो!" एक ज़ोरदार आवाज़ ने कहा.

माया मुड़ी. फिर वो खिलखिलाकर हंसी. वहां पर खिलोनों थे – कुत्ते, गायें, बकरियां और भेड़ें, बन्दर, हाथी, चीते, भालू और हिरण, सभी अपने-अपने सर हिला रहे थे.
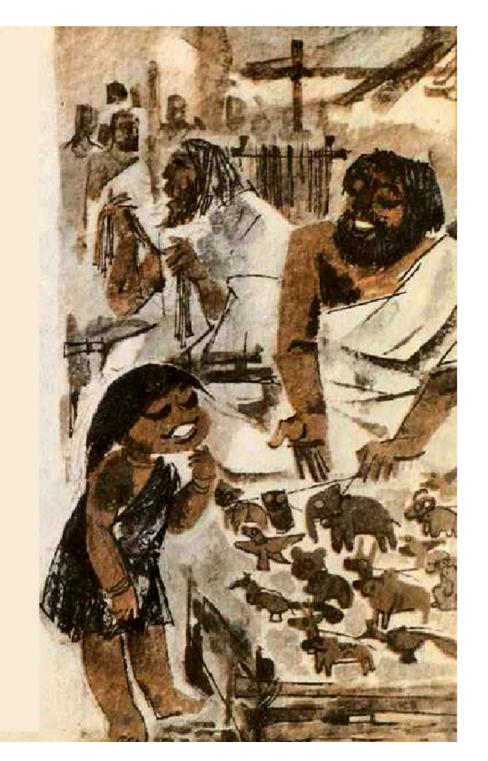
उनके साथ-साथ तरह-तरह की चिड़ियें भी थीं – मोर, उल्लू, चीलें, और बत्तखें. वे सभी अपने-अपने सर हिला रही थीं.

"यह खिलोनें तो बहुत सुन्दर हैं," माया ने कहा.

सभी खिलोनों को उसने निहारा. उनमें से एक खिलौना वो लेना चाहती थी. वो बा से एक खिलौना खरीदने को कहेगी. अब उसे अपना मन बनाना था – उसे हाथी चाहिए या मोर! पर तभी उसकी निगाह अगली दुकान पर पड़ी. वहां पर ऊन की चीज़ें और कपड़ों की बनी गुड़ियाँ बिक रही थीं. और साथ में मुलायम रंग-बिरंगी गेंदें भी बिक रही थीं.

अरे गेंद! उसे गेंद तो ज़रूर चाहिए थी! अब वो बा से हाथी खरीदने को नहीं कहेगी. वो उनसे गेंद खरीदने को कहेगी, वो गेंद मुलायम और बहुत रंग-बिरंगी होगी. वो गेंद तोतो और कोको की गेंद से भी अच्छी होगी.

फिर वो अपने पिता के पास वापिस गई और उसने कहा, "बा, मुझे एक मुलायम गेंद चाहिए."

जब माया बा से गेंद खरीदने को कह रही थी, तभी पिताजी ने माया से घर वापिस चलने को कहा. "चलो बेटा, अब हमें घर वापिस जाना चाहिए."

“मुझे वो गेंद ज़रूर चाहिए,” माया ने दुबारा कहा.

“तुम्हारी गेंद हम कल खरीदेंगे,” बा ने कहा. “मैं कल गेंद ज़रूर खरीदूंगा. कल देवी का त्यौहार है इसलिए कल मेरे सारे खिलोनें और बर्तन बिक जायेंगे.”

“पर मुझे गेंद अभी चाहिए,” माया ने दृढ़ता से कहा.

“चलो, घर चलो,” बा ने कुछ गुस्से में कहा.

माया रोने लगी. बा को यह अच्छा नहीं लगा. माया को रोते देख उन्हें दुःख हुआ.

फिर वो उस दुकान पर गए जहाँ ऊनी चीज़ें बिक रही थीं. उस गेंद के बदले में बा ने अपनी मिट्टी की एक गाड़ी दी, जिसे दो बैल खींच रहे थे. फिर उन्होनें गेंद माया को थमा दी.
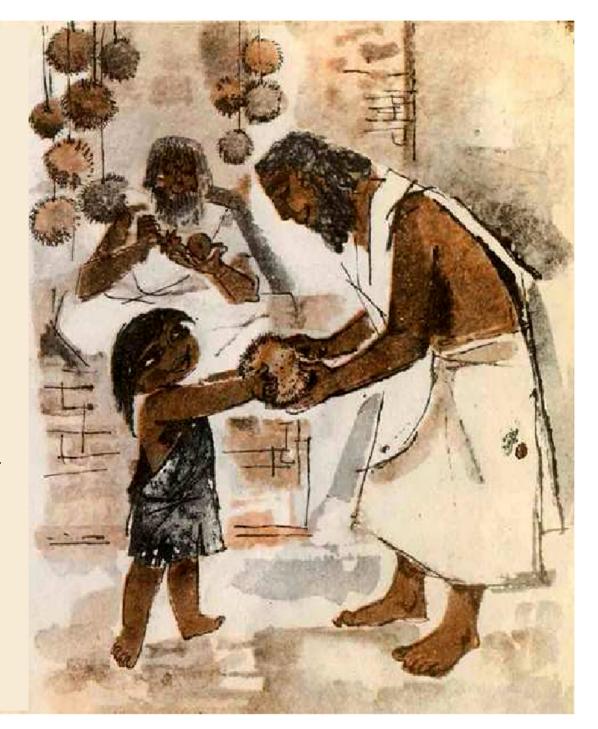
कल शाम जिस गेंद से माया अपने मित्रों तोतो और कोको के साथ खेली थी, यह गेंद उससे भी बड़ी थी. माया इस गेंद से बेहद खुश थी – क्यूंकि वो उसकी दोस्तों की गेंद से ज़्यादा बड़ी और रंग-बिरंगी थी. जब पिता, माया को गोदी में घर ले जा रहे थे तो माया बेहद खुश थी. ऐसा लगता था जैसे वो कोई गीत गुनगुना रही हो.

फिर उसने बड़ी नारंगी जैसे सूरज को घने पेड़ों के नीचे छिपते देखा. सूरज भी बिल्कुल एक गेंद जैसा गोल था! पिताजी जब तक घर पहुंचे तब तक माया की आँखें नींद से बंद हो रही थीं.

अब किसी भी हालत में माया जगी नहीं रह सकती थी – उसे बहुत ज़ोर की नींद आ रही थी. उसके चारों ओर मिट्टी के दिए जल रहे थे. रात होने से पहले बहुत से लोग प्रार्थना और भजन गा रहे थे. पर माया अपनी छोटी खाट पर गेंद के साथ लेटी थी. वो एक सुन्दर सपना देख रही थी – अपनी बड़ी, रंग-बिरंगी और मुलायम गेंद का सपना!